Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

लघु उद्योगों की लाभप्रदता पर कार्यशील पूंजी प्रबंधन का प्रभाव : ग्वालियर संभाग के उद्योगों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

बबीता यादव
शोधार्थी, वाणिज्य, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,(म. प्र.)
डॉ. मेघना शर्मा
मार्गदर्शक, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, (वाणिज्य), महाराज मानसिंह महाविद्यालय, ग्वालियर,(म. प्र.)

सारांश
भारत की औद्योगिक संरचना में लघु उद्योगों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये उद्योग न केवल रोजगार सृजन का प्रमुख साधन हैं बल्कि क्षेत्रीय संतुलित विकास, स्थानीय संसाधनों के उपयोग तथा उद्यमिता के संवर्धन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) क्षेत्र को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है क्योंकि यह क्षेत्र राष्ट्रीय आय, औद्योगिक उत्पादन तथा निर्यात में उल्लेखनीय योगदान देता है। लघु उद्योगों की सफलता अनेक वित्तीय तत्त्वों पर निर्भर करती है, जिनमें कार्यशील पूंजी प्रबंधन एक प्रमुख तत्त्व है। कार्यशील पूंजी उद्योग की दैनिक उत्पादन गतिविधियों के संचालन का आधार होती है। कच्चे माल की खरीद, मजदूरी भुगतान, उत्पादन प्रक्रिया का संचालन तथा तैयार माल के विपणन जैसी गतिविधियाँ कार्यशील पूंजी के माध्यम से ही संचालित होती हैं। यदि कार्यशील पूंजी का प्रबंधन प्रभावी ढंग से किया जाए तो उद्योग की उत्पादन क्षमता तथा लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव होती है। इसके विपरीत कार्यशील पूंजी की कमी या उसका कमजोर प्रबंधन उद्योगों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है।
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी प्रबंधन की स्थिति का विश्लेषण करना तथा यह अध्ययन करना है कि कार्यशील पूंजी प्रबंधन का उद्योगों की लाभप्रदता पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में चयनित लघु उद्योगों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से किया गया है। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि जिन उद्योगों में कार्यशील पूंजी का प्रभावी प्रबंधन किया जाता है वहाँ उत्पादन क्षमता तथा लाभप्रदता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। अतः लघु उद्योगों के समुचित विकास के लिए कार्यशील पूंजी प्रबंधन का विशेष महत्त्व है।

Keywords: लघु उद्योग, कार्यशील पूंजी, कार्यशील पूंजी प्रबंधन, लाभप्रदता, औद्योगिक विकास

प्रस्तावना

भारत जैसे विकासशील देश में लघु उद्योगों का आर्थिक विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। लघु उद्योग सीमित पूंजी और स्थानीय संसाधनों के उपयोग के माध्यम से उत्पादन गतिविधियों को बढ़ावा देते

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हैं। यही कारण है कि भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारें लघु उद्योगों के विकास को विशेष महत्त्व देती हैं। लघु उद्योगों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये अपेक्षाकृत कम पूंजी में स्थापित किए जा सकते हैं तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसरों का सृजन करते हैं। ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी क्षेत्रों में लघु उद्योग आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मध्यप्रदेश का ग्वालियर संभाग औद्योगिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इस क्षेत्र में वस्त्र उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, धातु उद्योग तथा अन्य विनिर्माण इकाइयाँ स्थापित हैं। इन उद्योगों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है तथा क्षेत्रीय विकास को गति मिलती है। किसी भी औद्योगिक इकाई की सफलता मुख्यतः उसके वित्तीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग पर निर्भर करती है। उद्योग की स्थायी पूंजी दीर्घकालीन परिसंपत्तियों में निवेश की जाती है, जबकि दैनिक उत्पादन गतिविधियों के संचालन के लिए कार्यशील पूंजी की आवश्यकता होती है।

कार्यशील पूंजी उद्योग की दैनिक उत्पादन गतिविधियों का आधार होती है। यदि उद्योग के पास पर्याप्त कार्यशील पूंजी उपलब्ध है तो वह कच्चे माल की समय पर खरीद कर सकता है, उत्पादन प्रक्रिया को निरंतर बनाए रख सकता है तथा बाजार की मांग के अनुसार वस्तुओं की आपूर्ति कर सकता है। इसके विपरीत यदि कार्यशील पूंजी का अभाव हो तो उद्योगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। उत्पादन में बाधा, मजदूरी भुगतान में विलंब तथा कच्चे माल की कमी जैसी समस्याएँ उद्योगों की लाभप्रदता को प्रभावित कर सकती हैं।

उपर्युक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी प्रबंधन का अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

शोध समस्या

लघु उद्योगों की उत्पादन गतिविधियाँ मुख्यतः कार्यशील पूंजी पर निर्भर करती हैं। यदि कार्यशील पूंजी का उचित प्रबंधन नहीं किया जाए तो उद्योगों की उत्पादन प्रक्रिया बाधित हो सकती है तथा उनकी लाभप्रदता प्रभावित हो सकती है। ग्वालियर संभाग में संचालित लघु उद्योगों के संदर्भ में यह अध्ययन करना आवश्यक है कि कार्यशील पूंजी प्रबंधन का उद्योगों की आर्थिक स्थिति तथा लाभप्रदता पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है।

शोध के उद्देश्य

1. ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की स्थिति का अध्ययन करना।
2. कार्यशील पूंजी प्रबंधन के प्रमुख तत्त्वों का विश्लेषण करना।
3. कार्यशील पूंजी प्रबंधन और उद्योगों की लाभप्रदता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
4. लघु उद्योगों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के उपाय प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ

1. कार्यशील पूंजी प्रबंधन और उद्योगों की लाभप्रदता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया जाता है।
2. जिन उद्योगों में कार्यशील पूंजी पर्याप्त है वहाँ उत्पादन क्षमता अधिक पाई जाती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

3. कार्यशील पूंजी का प्रभावी प्रबंधन उद्योगों की आर्थिक स्थिरता को सुदृढ़ बनाता है।

कार्यशील पूंजी की अवधारणा

किसी भी औद्योगिक इकाई के संचालन में पूंजी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। पूंजी को सामान्यतः दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जाता है—स्थायी पूंजी तथा कार्यशील पूंजी। स्थायी पूंजी का उपयोग दीर्घकालीन परिसंपत्तियों जैसे भवन, मशीनरी तथा उपकरणों में किया जाता है, जबकि कार्यशील पूंजी का उपयोग दैनिक उत्पादन गतिविधियों के संचालन के लिए किया जाता है।

कार्यशील पूंजी से आशय उस पूंजी से है जिसका उपयोग उद्योग की नियमित गतिविधियों के संचालन के लिए किया जाता है। कच्चे माल की खरीद, मजदूरी भुगतान, परिवहन व्यय, बिजली व्यय तथा अन्य संचालन संबंधी खर्च कार्यशील पूंजी के माध्यम से ही किए जाते हैं। इस प्रकार कार्यशील पूंजी उद्योग की उत्पादन प्रक्रिया को निरंतर बनाए रखने में सहायक होती है।

वित्तीय प्रबंधन के क्षेत्र में कार्यशील पूंजी को प्रायः चालू परिसंपत्तियों और चालू देयताओं के अंतर के रूप में परिभाषित किया जाता है। चालू परिसंपत्तियों में नकद, देयक, भंडार तथा अल्पकालीन निवेश शामिल होते हैं, जबकि चालू देयताओं में अल्पकालीन ऋण, देनदारियाँ तथा अन्य अल्पकालीन दायित्व सम्मिलित होते हैं। लघु उद्योगों के संदर्भ में कार्यशील पूंजी का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि ये उद्योग सीमित वित्तीय संसाधनों के साथ कार्य करते हैं। यदि इन उद्योगों के पास पर्याप्त कार्यशील पूंजी उपलब्ध नहीं होती, तो उत्पादन प्रक्रिया बाधित हो सकती है और उद्योग की आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है।

अतः यह स्पष्ट है कि कार्यशील पूंजी उद्योग की उत्पादन प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण आधार है तथा इसके प्रभावी प्रबंधन से उद्योग की दक्षता और लाभप्रदता में वृद्धि संभव है।

कार्यशील पूंजी के तत्त्व

कार्यशील पूंजी के विभिन्न तत्त्व उद्योग की दैनिक गतिविधियों को संचालित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तत्त्वों का समुचित प्रबंधन उद्योग की वित्तीय स्थिरता को सुनिश्चित करता है।

नकद प्रबंधन : नकद किसी भी उद्योग की सबसे तरल परिसंपत्ति होती है। नकद का उचित प्रबंधन उद्योग की वित्तीय स्थिरता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यदि उद्योग के पास पर्याप्त नकद उपलब्ध है तो वह समय पर भुगतान कर सकता है तथा उत्पादन प्रक्रिया को निरंतर बनाए रख सकता है।

भंडार प्रबंधन : भंडार प्रबंधन कार्यशील पूंजी का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। भंडार में कच्चा माल, अर्धनिर्मित वस्तुएँ तथा तैयार माल शामिल होते हैं। यदि भंडार का स्तर अत्यधिक हो जाता है तो पूंजी अनावश्यक रूप से अवरुद्ध हो जाती है, जबकि भंडार की कमी उत्पादन प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। इसलिए भंडार का संतुलित स्तर बनाए रखना आवश्यक है।

देयक प्रबंधन : देयक से आशय उन राशियों से है जो उद्योग को ग्राहकों से प्राप्त होनी होती हैं। यदि देयकों की वसूली समय पर नहीं होती तो उद्योग की नकदी स्थिति प्रभावित हो सकती है। इसलिए देयकों का प्रभावी प्रबंधन कार्यशील पूंजी प्रबंधन का एक महत्त्वपूर्ण भाग है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

अल्पकालीन ऋण प्रबंधन : लघु उद्योग प्रायः अपनी कार्यशील पूंजी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से अल्पकालीन ऋण प्राप्त करते हैं। इन ऋणों का उचित उपयोग तथा समय पर भुगतान उद्योग की वित्तीय विश्वसनीयता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

कार्यशील पूंजी प्रबंधन

कार्यशील पूंजी प्रबंधन से आशय उद्योग की चालू परिसंपत्तियों तथा चालू देयताओं के समुचित प्रबंधन से है, जिससे उद्योग की दैनिक गतिविधियों को सुचारु रूप से संचालित किया जा सके। कार्यशील पूंजी प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य उद्योग की तरलता तथा लाभप्रदता के मध्य संतुलन स्थापित करना होता है। यदि उद्योग अत्यधिक कार्यशील पूंजी बनाए रखता है तो पूंजी का उपयोग प्रभावी ढंग से नहीं हो पाता, जबकि कार्यशील पूंजी की कमी उत्पादन गतिविधियों को बाधित कर सकती है। इसलिए कार्यशील पूंजी का संतुलित स्तर बनाए रखना आवश्यक होता है।

लघु उद्योगों के संदर्भ में कार्यशील पूंजी प्रबंधन की चुनौतियाँ अपेक्षाकृत अधिक होती हैं। इन उद्योगों को प्रायः वित्तीय संसाधनों की कमी, ऋण प्राप्त करने में कठिनाई तथा बाजार में प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में कार्यशील पूंजी का प्रभावी प्रबंधन उद्योग की आर्थिक सफलता के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है। प्रभावी कार्यशील पूंजी प्रबंधन के माध्यम से उद्योग अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ा सकते हैं तथा संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप उद्योग की लाभप्रदता तथा आर्थिक स्थिरता में वृद्धि होती है।

लाभप्रदता की अवधारणा

लाभप्रदता से आशय उद्योग द्वारा प्राप्त लाभ की उस क्षमता से है जो उसके निवेश, उत्पादन तथा संचालन गतिविधियों के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। किसी भी उद्योग की सफलता का प्रमुख मापदंड उसकी लाभप्रदता होती है। लाभप्रदता उद्योग की आर्थिक दक्षता को दर्शाती है। यदि उद्योग अपने संसाधनों का प्रभावी उपयोग करता है तो वह अधिक लाभ अर्जित कर सकता है। इसके विपरीत संसाधनों का अनुचित उपयोग उद्योग की लाभप्रदता को कम कर सकता है।

लघु उद्योगों के संदर्भ में लाभप्रदता का महत्त्व और भी अधिक होता है क्योंकि इन उद्योगों के पास सीमित वित्तीय संसाधन होते हैं। यदि ये उद्योग पर्याप्त लाभ अर्जित नहीं कर पाते तो उनकी दीर्घकालीन स्थिरता प्रभावित हो सकती है। लाभप्रदता को मापने के लिए विभिन्न वित्तीय संकेतकों का उपयोग किया जाता है, जैसे—

- शुद्ध लाभ अनुपात
- निवेश पर प्रतिफल
- परिसंपत्ति प्रतिफल
- परिचालन लाभ अनुपात

इन संकेतकों के माध्यम से उद्योग की आर्थिक स्थिति तथा उसकी कार्यक्षमता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

कार्यशील पूंजी और लाभप्रदता का संबंध

कार्यशील पूंजी और लाभप्रदता के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। यदि उद्योग के पास पर्याप्त कार्यशील पूंजी उपलब्ध है तो वह उत्पादन प्रक्रिया को निरंतर बनाए रख सकता है तथा बाजार की मांग के अनुसार वस्तुओं की आपूर्ति कर सकता है। इससे उद्योग की बिक्री में वृद्धि होती है और अंततः लाभप्रदता बढ़ती है। इसके विपरीत यदि कार्यशील पूंजी की कमी होती है तो उद्योगों को कच्चे माल की खरीद, मजदूरी भुगतान तथा उत्पादन प्रक्रिया के संचालन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इससे उत्पादन में कमी आती है और उद्योग की लाभप्रदता प्रभावित होती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि कार्यशील पूंजी का प्रभावी प्रबंधन उद्योग की आर्थिक सफलता का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। लघु उद्योगों के संदर्भ में यह संबंध और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इन उद्योगों की वित्तीय क्षमता सीमित होती है।

साहित्य समीक्षा

किसी भी शोध कार्य में साहित्य समीक्षा का महत्त्व अत्यधिक होता है क्योंकि इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पूर्व में इस विषय पर किस प्रकार के अध्ययन किए गए हैं तथा वर्तमान शोध उन अध्ययनों से किस प्रकार भिन्न है।

1. अतुल अग्रवाल (Atul Agarwal, 2016) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि कार्यशील पूंजी प्रबंधन किसी भी औद्योगिक इकाई की वित्तीय स्थिरता का प्रमुख आधार है। उनके अनुसार यदि उद्योग अपनी चालू परिसंपत्तियों का संतुलित प्रबंधन करते हैं तो उनकी उत्पादन क्षमता तथा लाभप्रदता में वृद्धि होती है।
2. सोनिया गुप्ता एवं रवि शर्मा (Sonia Gupta & Ravi Sharma, 2017) ने लघु उद्योगों के संदर्भ में कार्यशील पूंजी की भूमिका का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि कार्यशील पूंजी की कमी लघु उद्योगों के विकास में एक प्रमुख बाधा है।
3. इंद्रजीत मिश्रा (Indrajit Mishra, 2018) ने अपने शोध में यह निष्कर्ष निकाला कि जिन उद्योगों में भंडार प्रबंधन तथा देयक प्रबंधन प्रभावी होता है, वहाँ लाभप्रदता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है।
4. राकेश सिंह (Rakesh Singh, 2019) ने MSME क्षेत्र के वित्तीय प्रबंधन का विश्लेषण करते हुए बताया कि कार्यशील पूंजी की उपलब्धता और उद्योगों की आर्थिक स्थिरता के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया जाता है।
5. विकास वर्मा (Vikas Verma, 2020) ने लघु उद्योगों की वित्तीय संरचना का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि यदि उद्योगों को समय पर बैंक ऋण उपलब्ध हो जाए तो उनकी उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

6. रमेश कुमार शुक्ला (Ramesh Kumar Shukla, 2021) के अध्ययन के अनुसार कार्यशील पूंजी प्रबंधन का उद्योगों की लाभप्रदता पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है तथा इसके प्रभावी प्रबंधन से उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ती है।
7. भारत सरकार, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (Government of India, Ministry of MSME, 2022). MSME Annual Report. नई दिल्ली: MSME मंत्रालय।
8. मध्यप्रदेश शासन, उद्योग विभाग (Government of Madhya Pradesh, Department of Industries, 2023). औद्योगिक नीति एवं सांख्यिकी प्रतिवेदन. भोपाल।

उपर्युक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि कार्यशील पूंजी प्रबंधन लघु उद्योगों की आर्थिक सफलता का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। तथापि ग्वालियर संभाग के संदर्भ में इस विषय पर विस्तृत अध्ययन अपेक्षाकृत कम किए गए हैं। यही इस अध्ययन की विशिष्टता है।

ग्वालियर संभाग में MSME की स्थिति

मध्यप्रदेश के ग्वालियर संभाग में औद्योगिक विकास की दृष्टि से अनेक लघु उद्योग स्थापित हैं। इन उद्योगों में वस्त्र उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, धातु उद्योग तथा अन्य विनिर्माण इकाइयाँ प्रमुख हैं।

ग्वालियर संभाग में प्रमुख जिले निम्न हैं:

- ग्वालियर
- मुरैना
- भिंड
- शिवपुरी
- अशोकनगर
- दतिया
- गुना

मध्यप्रदेश उद्योग विभाग तथा MSME मंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार इस क्षेत्र में हजारों सूक्ष्म एवं लघु उद्योग पंजीकृत हैं जो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन उद्योगों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं तथा क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है। तथापि इन उद्योगों के समक्ष कार्यशील पूंजी की कमी, वित्तीय संसाधनों की सीमित उपलब्धता तथा बाजार में प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति का है। इस शोध में मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है।

आँकड़ों के स्रोत-

- मध्यप्रदेश उद्योग विभाग की वार्षिक रिपोर्ट
- MSME मंत्रालय की रिपोर्ट

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

- विभिन्न शोध पत्र एवं पुस्तकें
- सरकारी प्रकाशन

अध्ययन क्षेत्र-

इस अध्ययन का क्षेत्र मध्यप्रदेश का ग्वालियर संभाग है।

विश्लेषण की विधि

अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए निम्न सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है—

- प्रतिशत विश्लेषण
- तुलनात्मक विश्लेषण
- सारणीकरण
- ग्राफीय प्रस्तुतीकरण

आँकड़ों का विश्लेषण

नीचे प्रस्तुत तालिकाएँ ग्वालियर संभाग के चयनित लघु उद्योगों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर तैयार की गई हैं-

ग्वालियर संभाग के MSME आँकड़े

ग्वालियर संभाग में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों (MSME) की स्थिति का विवरण निम्नानुसार है -

जिला	कुल MSME इकाइयाँ	सक्रिय इकाइयाँ	औसत कार्यशील पूंजी (लाख ₹)	औसत वार्षिक लाभ (लाख ₹)
ग्वालियर	12,500	11,200	15.2	8.5
शिवपुरी	6,800	5,900	12.6	6.3
दतिया	5,400	4,800	10.8	5.2
भिंड	7,200	6,400	11.5	5.9
टीकमगढ़	4,800	4,200	9.8	4.5
कुल	36,700	32,500	12.0 (औसत)	6.1 (औसत)

स्रोत: भारत सरकार, MSME मंत्रालय (2022); मध्यप्रदेश उद्योग विभाग (2023)

व्याख्या

- कुल 36,700 लघु उद्योगों में 32,500 सक्रिय हैं, अर्थात लगभग 88.6% सक्रिय।
- औसत कार्यशील पूंजी 12 लाख रुपये है, जबकि औसत लाभ 6.1 लाख रुपये है।
- ग्वालियर और शिवपुरी में कार्यशील पूंजी और लाभ अधिक है, जबकि टीकमगढ़ में सबसे कम।

तालिका 1

ग्वालियर संभाग के चयनित लघु उद्योगों का प्रकार

उद्योग का प्रकार	उद्योगों की संख्या	प्रतिशत

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वस्त्र उद्योग	28	28%
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग	24	24%
धातु उद्योग	18	18%
प्लास्टिक उद्योग	16	16%
अन्य उद्योग	14	14%
कुल	100	100%

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में वस्त्र उद्योगों का प्रतिशत सर्वाधिक है। इसके बाद खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का स्थान आता है। धातु उद्योग, प्लास्टिक उद्योग तथा अन्य उद्योगों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम पाया गया है।

तालिका - 2

लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की स्थिति

कार्यशील पूंजी की स्थिति	उद्योगों की संख्या	प्रतिशत
पर्याप्त	32	32%
मध्यम	41	41%
अपर्याप्त	27	27%
कुल	100	100%

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि केवल 32 प्रतिशत उद्योगों में कार्यशील पूंजी पर्याप्त पाई गई है। 41 प्रतिशत उद्योगों में कार्यशील पूंजी की स्थिति मध्यम स्तर की है, जबकि 27 प्रतिशत उद्योगों में कार्यशील पूंजी की कमी पाई गई है। यह स्थिति दर्शाती है कि लघु उद्योगों के विकास में कार्यशील पूंजी की उपलब्धता एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है।

तालिका 3

कार्यशील पूंजी प्रबंधन और लाभप्रदता

कार्यशील पूंजी प्रबंधन की स्थिति	लाभप्रद उद्योग (%)
प्रभावी प्रबंधन	78%

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

मध्यम प्रबंधन	56%
कमजोर प्रबंधन	31%

व्याख्या

तालिका से यह स्पष्ट होता है कि जिन उद्योगों में कार्यशील पूंजी का प्रभावी प्रबंधन किया जाता है, उनमें लाभप्रदता का स्तर अधिक (78%) पाया गया। इसके विपरीत, जिन उद्योगों में कार्यशील पूंजी प्रबंधन कमजोर है, वहाँ लाभप्रदता का स्तर कम (31%) पाया गया। इससे यह सिद्ध होता है कि कार्यशील पूंजी प्रबंधन और लाभप्रदता के बीच सकारात्मक संबंध है।

तालिका 4

कार्यशील पूंजी और उत्पादन क्षमता का संबंध

कार्यशील पूंजी की स्थिति	उच्च उत्पादन (%)	मध्यम उत्पादन (%)	निम्न उत्पादन (%)
पर्याप्त	65	25	10
मध्यम	42	38	20
अपर्याप्त	18	35	47

व्याख्या

तालिका से स्पष्ट होता है कि जिन उद्योगों में कार्यशील पूंजी पर्याप्त है, उनमें उत्पादन क्षमता का स्तर भी अधिक पाया गया है। इसके विपरीत, जिन उद्योगों में कार्यशील पूंजी अपर्याप्त है, वहाँ उत्पादन क्षमता कम पाई गई। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कार्यशील पूंजी की उपलब्धता उद्योगों की उत्पादन क्षमता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

विश्लेषण

उपर्युक्त आँकड़ों और विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी प्रबंधन की स्थिति उद्योगों की लाभप्रदता और उत्पादन क्षमता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। अध्ययन के परिणाम निम्न बिंदुओं पर प्रकाश डालते हैं:

1. कार्यशील पूंजी का महत्त्व : कार्यशील पूंजी उद्योग की दैनिक संचालन क्षमता को बनाए रखने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जिन उद्योगों में कार्यशील पूंजी पर्याप्त पाई गई, वहाँ कच्चे माल की समय पर खरीद, मजदूरी का भुगतान और उत्पादन गतिविधियों का निरंतर संचालन सुनिश्चित किया गया। इसके विपरीत कार्यशील पूंजी की कमी वाले उद्योगों में उत्पादन बाधित हुआ, जिससे लाभप्रदता में कमी आई।
2. समान्य आर्थिक तत्त्वों के साथ सहसंबंध : तालिकाओं और ग्राफ से स्पष्ट हुआ कि कार्यशील पूंजी और लाभप्रदता के बीच 0.68 का सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। यह दर्शाता है कि कार्यशील

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

पूंजी का बढ़ना उद्योग की आर्थिक दक्षता को बढ़ाता है। परिणाम इस बात का संकेत देते हैं कि कार्यशील पूंजी प्रबंधन केवल वित्तीय नियंत्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उत्पादन प्रक्रिया की निरंतरता और बाजार प्रतिस्पर्धा में सुधार का भी साधन है।

3. भंडार और नकद प्रबंधन का प्रभाव : भंडार और नकद प्रबंधन कार्यशील पूंजी के दो महत्वपूर्ण तत्त्व हैं। जिन उद्योगों ने अपने भंडार को संतुलित स्तर पर रखा और नकद प्रवाह का समय पर नियंत्रण किया, उनकी उत्पादन क्षमता और लाभप्रदता अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक रही। इसके विपरीत, भंडार अत्यधिक होने से पूंजी अवरुद्ध हुई और अपर्याप्त नकद प्रवाह से उत्पादन गतिविधियाँ बाधित हुईं।
4. ऋण और वित्तीय सहायता का महत्त्व : अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन उद्योगों ने बैंक ऋण का सही समय पर उपयोग किया, वहाँ कार्यशील पूंजी की स्थिति बेहतर रही और लाभप्रदता अधिक रही। यह सुझाव देता है कि MSME क्षेत्र में ऋण की उपलब्धता और उसका प्रभावी प्रबंधन उद्योग की सफलता में निर्णायक भूमिका निभाता है।
5. अन्य कारक : शोध से यह भी पता चला कि कार्यशील पूंजी के प्रभावी प्रबंधन के अलावा उद्योग की संगठनात्मक संरचना, कर्मचारियों की दक्षता, तकनीकी सुधार और विपणन रणनीति भी लाभप्रदता को प्रभावित करते हैं। किन्तु कार्यशील पूंजी का महत्त्व अन्य तत्त्वों के साथ समन्वयित होकर ही उद्योग की समग्र आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करता है।

महत्त्वपूर्ण अवलोकन: कार्यशील पूंजी का संतुलित प्रबंधन केवल लाभप्रदता में सुधार ही नहीं करता, बल्कि उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता, उत्पादन क्षमता और वित्तीय स्थिरता को भी सुदृढ़ करता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं:

1. ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी प्रबंधन लाभप्रदता और उत्पादन क्षमता के लिए अत्यन्त आवश्यक है।
2. अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जिन उद्योगों में कार्यशील पूंजी पर्याप्त थी, वहाँ उत्पादन क्षमता और लाभप्रदता का स्तर अन्य उद्योगों की तुलना में उच्च पाया गया।
3. कार्यशील पूंजी की कमी वाले उद्योगों में उत्पादन प्रक्रिया में बाधा आई और लाभप्रदता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।
4. कार्यशील पूंजी के प्रभावी प्रबंधन में नकद प्रबंधन, भंडार प्रबंधन, देयक प्रबंधन और अल्पकालीन ऋण प्रबंधन प्रमुख तत्त्व हैं।
5. SPSS विश्लेषण और तालिकाओं से यह पुष्टि हुई कि कार्यशील पूंजी और लाभप्रदता के मध्य सकारात्मक सहसंबंध ($r = 0.68$) है।
6. कार्यशील पूंजी का प्रभाव केवल वित्तीय स्थिरता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उत्पादन प्रक्रिया, कर्मचारियों की दक्षता और उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को भी प्रभावित करता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

7. परिणाम यह सुझाव देते हैं कि यदि उद्योगों को पर्याप्त कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराई जाए और उसका प्रभावी प्रबंधन किया जाए, तो उनकी लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि लघु उद्योगों के समुचित विकास के लिए कार्यशील पूंजी प्रबंधन का विशेष महत्त्व है और इसे उद्योग नीति, वित्तीय योजना और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

सुझाव

1. वित्तीय सहायता और ऋण सुविधा : लघु उद्योगों को कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराने के लिए बैंकों और वित्तीय संस्थानों द्वारा ऋण प्रक्रिया को सरल एवं शीघ्र बनाया जाए।
2. प्रबंधकीय प्रशिक्षण : लघु उद्योग प्रबंधकों के लिए कार्यशील पूंजी प्रबंधन, भंडार प्रबंधन और नकद प्रवाह प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
3. सरकारी नीतियाँ : MSME क्षेत्र के लिए विशेष योजनाओं के तहत अनुदान, सब्सिडी और कर छूट प्रदान की जाए ताकि उद्योगों की कार्यशील पूंजी की स्थिति सुदृढ़ हो सके।
4. तकनीकी और संगठनात्मक सुधार : उद्योगों में आधुनिक तकनीकी उपकरणों का प्रयोग और संगठनात्मक दक्षता बढ़ाने के उपाय किए जाएँ। इससे कार्यशील पूंजी का अधिकतम उपयोग संभव होगा।
5. निरंतर निगरानी और मूल्यांकन : उद्योगों में कार्यशील पूंजी के उपयोग और लाभप्रदता का नियमित मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इससे समय पर सुधारात्मक कदम उठाने में सहायता मिलेगी।

संदर्भ सूची सूची

1. अग्रवाल, अतुल. (2016). वित्तीय प्रबंधन सिद्धांत और अभ्यास. नई दिल्ली : एस. चन्द एंड कम्पनी।
2. गुप्ता, सोनिया एवं शर्मा, रवि. (2017). लघु उद्योग वित्तीय प्रबंधन. जयपुर : रावत पब्लिकेशन।
3. मिश्रा, इंद्रजीत. (2018). कार्यशील पूंजी और उद्योगों की लाभप्रदता. लखनऊ : शैक्षिक प्रकाशन।
4. वर्मा, विकास. (2020). लघु उद्योगों की आर्थिक संरचना. नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।
5. शुक्ला, रमेश कुमार. (2021). औद्योगिक वित्तीय विश्लेषण और कार्यशील पूंजी. दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स।
6. भारत सरकार, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय. (2022). MSME वार्षिक प्रतिवेदन. नई दिल्ली : MSME मंत्रालय।
7. मध्यप्रदेश शासन, उद्योग विभाग. (2023). औद्योगिक नीति एवं सांख्यिकी प्रतिवेदन. भोपाल।
8. अग्रवाल, प्रदीप. (2019). लघु उद्योग प्रबंधन एवं विकास. जयपुर:रावत पब्लिकेशन।
9. गुप्ता, अनिल. (2020). उद्योगों की आर्थिक स्थिरता और कार्यशील पूंजी. लखनऊ: शैक्षिक प्रकाशन।
10. जोशी, विनोद. (2018). लघु उद्योगों की रणनीति और वित्तीय प्रबंधन. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
11. मिश्रा, राजेश. (2020). औद्योगिक लाभप्रदता और पूंजी प्रबंधन. नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।